हवस मिटाने के लिए तीन तलाक का इस्तेमाल कर रहे हैं मुस्लिम- मौर्य

उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने तीन तलाक मुद्दे पर विवादास्पद बयान दिया है। मौर्य ने बस्ती में एक कार्यक्रम के दौरान शुक्रवार को कहा- मुस्लिम तीन तलाक का इस्तेमाल पत्नियां बदलने और अपनी हवस मिटाने के लिए करते हैं। बीजेपी ऐसी मुस्लिम महिलाओं के साथ है, जिन्हें बेवजह और मनमाने ढंग से तीन तलाक दिया गया।

तीन तलाक का कोई आधार नहीं है। अगर कोई सिर्फ अपनी हवस शांत करने के पत्नी बदल रहा है और पत्नी, बच्चों को सड़क पर भीख मांगने को मजबूर कर रहा है, इसे कोई अधिकार नहीं कहेगा। ऐसे में मौर्य के बयान की सोशल मीडिया पर चर्चा हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन तलाक मुद्दे पर राजनीति न करने की नसीहत दी है।

शमशाद खान ने फेसबुक पर लिखा, इस मंत्री को एक बार वृंदावन आश्रम और बनारस आश्रम में जाना चाहिए। जहां हजारों की संख्या में विधवा औरतें हैं, जिनको घर से निकाल दिया गया। उसके बारे में सोचो ?

नियाज अहमद ने कहा, बिना तलाक पत्नी को छोड़ने वाले लोगों के बारे में भी कुछ विचार करेंगे महाराज ?

करुणा त्यागी ने ट्वीट किया, स्वामी प्रसाद मौर्य ने बिलकुल सही बात कही है लेकिन लेकिन कड़वे तरीके से। वरना तलाक के बाद कुछ दिनों में बिना दर्द के मुस्लिम शादी क्यों कर लेते हैं।

सुनीता लिखती हैं, मौर्य को बोलने से पहले एक बार सोच तो जरूर लेना चाहिए।

(बीबीसी)

कौन कहता है भूखे भजन न होंहि गोपाला ?

ये सरासर झूठी बात है

सच्चाई ये है कि भूखे भजन ही होई गोपाला

दुनिया भर की भूखी बेरोजगार और अनपढ़ जनता भजन ही करती है, और कुछ कर भी नहीं सकती।

भारतीय भूखों को देखिये वे भजन कीर्तन ध्यान समाधि से बाहर ही नहीं निकलते। फिर रजिस्टर्ड भगवान, बाबा, योगी, राजनेता, व्यापारी, अधिकारी आदि उनकी भूख को भंडारे, लंगर, भोज, जगराते कथा पंडाल, भोजन प्रसादी इत्यादि के जाल में फंसाकर उनसे भजन ही करवाते हैं।

भूख और भजन का यह आध्यात्मिक रिश्ता ही सब पाखण्ड की धुरी है। आप भारत के सबसे गरीब और भूखे इलाकों में जाइये वहां जैसा सम्मोहक और गहरा भजन चलता है वैसा कहीं नहीं मिलेगा।

धनाढ्यों में जो भजन चलता है उसका लक्ष्य भी सिर्फ भूखों को भजन से विमुख होने से रोकना भर है। समाज के भूखे अगर भजन बन्द कर दें तो धर्म, व्यापार और राजनीति की त्रिमूर्ति को सिरदर्द होने लगता है।

भूख और भजन की शादी से ही फासीवाद का लाल जन्मा है जिसकी किलकारी अब गली गली में गूंज रही है।

भूख भजन और गोपाल की इस त्रिमूर्ति ने ही सब सत्यानाश किया है।

भूखों की भूख कम हो और वे भजन से दूर हों इसी में लोकतंत्र का हित है।

-संजय श्रमन जोथे

मोदी जी ने डॉक्टरों के एक प्रोग्राम में पूरे कॉन्फिडेंस से बताया था कि पहली सर्जरी शिव जी ने गणेश जी की कर दी थी। योगी जी ने हाल ही में समझाया कि पहला कैशलेस गिफ्ट कृष्णजी ने सुदामा को दिया था। अब किसी दिन वित्तमंत्री कहेंगे कि पहला इंटरनेशनल ज्वाइंट प्रोजक्ट देवासुरों का समुद्र मंथन था। सच है, कहानियां बेचनेवाले जब जिम्मेदारी भरे पदों पर बैठ जाते हैं तो मिथक ही तथ्य हो जाते हैं।

-गुलशन कुमार अरोरा

बिल गेट्स ने एक रहस्य उजागार किया है कि उनकी पत्नी ने उनके बच्चों को 14 वर्ष तक मोबाईल नही लेने दिया। इसी प्रकार एप्पल के सहसंस्थापक स्टीव जॉब्स ने बताया कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी भी आईपैड नहीं लेने दिया उनके खाने की टेबल पर इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि की किताबों पर बच्चों से चर्चा करते थे। ये दुनिया के धनवान लोग है जो तकनीक को तैयार कराकर उसे बेच कर उससे मुनाफा कमा रहे है परन्तु अपने बच्चों के लिये तकनीक की बीमारी से बचा रहे है ।

और दूसरे तरफ हमारे देश के राजनेता है जो चुनाव मे बच्चों को स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर आदि मुफ्त देने की घोषणायें करते है और फिर भारतीय सभ्यता संस्कृति सनातन धर्म का गाना गाते हैं।

-रघु ठाकुर

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कोई भी व्यक्ति किसी भी महिला पर प्रेम करने के लिए दबाव नहीं बना सकता क्योंकि महिला की खुद की स्वतंत्र पसंद होती है।

पीठ ने कहा, यह किसी भी महिला की अपनी पसंद है कि वह किसी व्यक्ति से प्रेम करना चाहती है या नहीं। महिला पर कोई भी किसी से प्रेम करने का दबाव नहीं बना सकता। प्रेम की एक अवधारणा होती है और पुरुषों को यह स्वीकार करना चाहिए।

-जगदीश्वर चतुर्वेदी

शर्माजी का लॉजिक!! लॉजिक है!!

नमस्कार शर्माजी, कल आप अपने बेटे के लिए समूचे परिवार को लेकर लड़की देखने गए थे ...फिर क्या हुआ ? ...लड़की पसंद आई ?..

अरे भाई साहब सामने वालों ने लड़की तो नहीं दिखाई लेकिन लड़की की मां बहुत अच्छी थी

इसलिए हमने बेटे का रिश्ता पक्का कर दिया !

आपका दिमाग तो नहीं चकरा गया शर्मा जी ? ? लड़की की मां को देख कर कभी कोई शादी पक्की करता है ?

हां.. ! क्यों नहीं ? ? जब दिल्ली वाले मोदी को देखकर एमसीडी में बीजेपी को वोट कर सकते हैं तो हम लड़की की मां को देखकर बच्चे की शादी क्यों पक्की नहीं कर सकते ? ?

-रविंदर कुमार

जो बंधु हिंदी लिखते समय थोक में अंग्रेज़ी के शब्द पेलते हैं वो इस बात का जीता जागता सबूत हैं कि हिंदी की कुंजी पढ़कर यू पी एस सी पास करना कितना मुश्किल होता है।

-मधुप मोहता

पवित्रता या पाकीजगी जैसे शब्दों का इस्तेमाल धर्मो में और परम्परागत समाजों में बहुत होता है क्या पवित्रता जैसी कोई चीज होती है ?

मेरी राय इस पर

पवित्रता का कोई मतलब नही है यह शब्द भी शोषण का एक टूल है

कोई भी चीज़ इस प्रकृति में पवित्र या अपवित्र नही होती है

हर चीज ऊर्जा का एक रूप है जो परिवर्तनशील है जो सदैव रूपांतरित होती रहती है पर दोगले पित्रसत्तात्मक और जातिवादी कुंठा से भरे हुए लोगों ने पवित्रता की अवधारणा को रचा जिससे वह अपनी खोखली श्रेष्ठता बनाये रख सकें

ये अक्सर दलितों और स्त्रियों के लिए प्रयोग होता

और उन पशुओं के लिए भी इस्तेमाल होता है जो गंदगी समाप्त करके हमारे एन्वायरमेंट को साफ रखते हैं।

कितनी अजीब बात है

कण-कण में भगवान और ज़र्रे ज़र्रे में खुदा है

की बात कहने वाले धर्म पवित्रता और अपवित्रता की बात करके अपने ही ईश्वर के हर जगह होने को गलत साबित करते हैं।

-अंजू वलेरिया

एक घोड़ा था किसी राज्य में। उस राज्य पर आक्रमण हुआ तो सब भागे घोड़ा शांत खड़ा रहा।

-किसी ने उससे कहा अरे भागो भाई।

-घोड़े ने पूछा - क्यों ?

-उसने कहा - क्योंकि आक्रमण हुआ है दुश्मन का।

-घोड़े ने पूछा - उससे क्या होगा ?

-उसने कहा - दुश्मन तुम्हें गुलाम बना लेगा।

-घोड़े ने फिर पूछा - उससे क्या होगा ?

उसने कहा - अरे वह सवारी करेगा तुम्हारी।

घोड़े ने कहा - तो तुम पूजा करते थे ? सवारी तुम करो या कोई और मुझे क्या फर्क पड़ता है।

तो जिनका पेट खाली है उनका काहे का हिंदुस्तान काहे का पाकिस्तान काहे का संघ काहे का कांग्रेस। काहे का हिन्दू काहे का मुसलमान।

कितने ही पौधे छाँव में बरगद की मर गये
इलज़ाम मगर धूप के, सूरज के सर गये
सदियों से जिन्हें आपने बाँधा है हदों में
क्या होगा किसी रोज़ जो हद से गुज़र गये
इक बावला जो चीख़ के सच बोलने लगा
सारे शरीफ़ लोग अचानक ही डर गये
पतवार जिनको सौंप के हम सब थे मुतमइन
वे लोग नाव चलने से पहले उतर गये
इक अजनबी मकान किराये का था नदीम
और हम समझ रहे थे के हम अपने घर गये

-अमर नदीम

ईंट का जवाब पत्थर से तो कश्मीर में पत्थर का जवाब किससे दिया जाना चाहिए...

-अरविंद मौदगिल

जो सोचते हैं, वह टाइप हो जाएगा

सुबोध जोशी

विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता, सक्रियता और गरिमा बनाए रखने और बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक निरंतर प्रयास कर रहे हैं। किसी बीमारी, स्वाथ्य सम्बंधी समस्या, अंगभंग, विकलांगता आदि के कारण प्रभावित व्यक्ति सामान्य ढंग से वह कार्य नहीं कर पाते जो सामान्य व्यक्ति सहज ही कर लेते हैं। किंतु यदि कार्य के तरीके में ऐसे व्यक्तियों की स्थिति के अनुरूप परिवर्तन किए जाएं और उसके लिए विशिष्ट तकनीकी साधन उपलब्ध कराए जाएं तो, अलग ढंग से ही सही, ये व्यक्ति भी वे कार्य कर सकते हैं। ऐसे विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों को उनकी विशेष आवश्यकता के अनुरूप साधन मिल जाएं तो वे उसी कार्य को अलग ढंग से करने में सक्षम (भिन्न सक्षम) हो जाते हैं। परिणाम यह होता है कि वे भी सक्रिय और उपयोगी हो जाते हैं जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता और गरिमा बनी रहती या बढ़ती है।

छड़ी, बैसाखी, व्हीलचेयर, वॉकर, तिपहिया साइकिल, ऐनक, श्रवण यंत्र, ब्रेल उपकरण, कैलिपर आदि बहुत-सी चीज़ें हैं, जिन्हें हम अपने आसपास कई लोगों को इस्तेमाल करते हुए रोज़ ही देखते हैं। देखने में ये सारे उपकरण बहुत साधारण प्रतीत होते हैं लेकिन जो व्यक्ति इन्हें इस्तेमाल करते हैं, उनमें से प्रत्येक के लिए ये अत्यधिक महत्वपूर्ण सहायक उपकरण हैं। छड़ी जैसी अत्यंत साधारण चीज़ का महत्व समझने के लिए ज़रा यह समझने की कोशिश करें कि छड़ी के सहारे चलने वाले व्यक्ति की स्थिति छड़ी के बिना कैसी होगी ? इसी तरह कृत्रिम अंग भी बेहद सहायक होते हैं।

आधुनिक विज्ञान विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर पैनी निगाह रखे हुए है और निरंतर यह प्रयास कर रहा है कि हर एक चुनौती का हल खोजा जाए। कोशिश यह है कि मौजूदा उपकरणों को बेहतर बनाया जाए और नई तकनीकें भी खोजी जाएं। विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति के लिए विज्ञान और तकनीकी किस तरह आश्चर्यजनक रूप से सहायक हो सकते हैं इसे समझने के लिए प्रख्यात वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग के बारे में इंटरनेट के माध्यम से जानना लाभप्रद होगा।

ऐसे ही वैज्ञानिक प्रयासों में से एक है पैरालिसिस ग्रस्त व्यक्तियों के लिए एक ऐसा टाइपिंग उपकरण जो व्यक्ति के दिमाग को पढ़कर वह सब टाइप कर देगा जो वे टाइप करना चाहते हैं लेकिन अपने हाथ से नहीं कर सकते। इसे माइंड-रीडिंग टाइपिंग टूल कह सकते हैं। यह उपकरण कैलिफोर्निया स्थित स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडिसिन ने विकसित किया है।

प्रायोगिक तौर पर इसकी सहायता से तीन व्यक्तियों ने सिर्फ विचारों के माध्यम से कंप्यूटर पर टाइपिंग करने में सफलता हासिल की है। वे टाइपिंग का यह काम अपनी उंगलियों से नहीं कर पाते। इनमें से दो व्यक्तियों को मोटर न्यूरॉन डिसीज़ या एएलए है और एक को स्पाइनल कॉर्ड क्षति है जिसके कारण ये अपने हाथ-पैरों का इस्तेमाल करने में असमर्थ हैं और यह भी संभव है कि एएलए ग्रस्त व्यक्ति में भविष्य में बोलने की क्षमता भी ना रहे। अब तक विकसित किए गए उपकरणों में यह टाइपिंग के लिए सबसे तेज़ साबित हुआ है।

जिन व्यक्तियों की बोलने की क्षमता नहीं रहती वे अपने सर, गाल या आंख की हरकत से खास उपकरण की सहायता से कंप्यूटर के स्क्रीन पर अक्षर चुन सकते हैं, जैसा स्टीफन हॉकिंग के लिए इंतज़ाम किया गया है। किंतु दिमाग से सीधे मशीन को संकेत मिल जाएं और कार्य हो जाए ऐसी इंटरफेस तकनीकें विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं जिसका परिणाम स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की इस टीम की सफलता के रूप में सामने आया है।

इस तकनीक में व्यक्ति के दिमाग के प्राइमरी मोटर कॉर्टेक्स एरिया में छोटा-सा सिलिकॉन पैच लगाया गया। दिमाग का यह हिस्सा शारीरिक हलचल का नियंत्रण करता है। इस सिलिकॉन पैच को तार द्वारा कंप्यूटर से जोड़ा गया। व्यक्ति के दिमाग में अपने शरीर के विभिन्न अंगों को चलाने के बारे में उठने वाले विचारों को कोड के रूप में यह प्रणाली सीधे कंप्यूटर में पहुंचा देती है और कंप्यूटर इसे डिकोड/पढ़ कर स्क्रीन पर कर्सर चलाने लगता है। स्क्रीन पर दिखने वाले की-बोर्ड की मनचाही की पर कर्सर ले जाकर अक्षर, अंक और चिन्ह आसानी से टाइप किए जा सकते हैं। यह सब सिर्फ विचार की सहायता से हो जाता है, व्यक्ति को खुद किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रिया नहीं करनी पड़ती।

इस शोध की सफलता के बाद अब इस तकनीक में सुधार के प्रयास जारी हैं ताकि टाइपिंग की गति बढ़ाई जा सके। दिमाग से मिलने वाले विचार-संकेतों को कंप्यूटर जितनी तेज़ी से डिकोड कर सकेगा टाइपिंग भी उतनी ही तेज़ी से होगी। दिमाग के मोटर कॉर्टेक्स की कार्य प्रणाली को वैज्ञानिक जैसे-जैसे और अधिक समझने लगेंगे वैसे-वैसे कंप्यूटर पर विचार-संकेतों की डिकोडिंग की गति बढ़ाना संभव होता चला जाएगा। (स्रोत)

पेंटर राजा रवि वर्मा...

पेज 16 से आगे

तभी अपने स्टूडियो के लिए बंबई के गोरेगांव में जमीन खरीदी थी जिसकी कीमत 250 रुपए एकड़ थी।

रवि वर्मा के ईस्ट और वेस्ट को मिलाने के प्रयोग की कला समीक्षकों ने जमकर आलोचना की। रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा कि रवि के चित्रों में महिलाओं के शरीर का अनुपात सही नहीं है। वहीं एक तबके ने उन्हें भारत की सच्चाई न दिखाकर झूठे दिखावे पेंट करने वाला बनाया।

कई लोगों का मानना था कि रवि की सिर्फ वही पेंटिंग बिकती हैं जिनमें धार्मिक चित्र होते हैं। रवि वर्मा के टैलेंट से ज्यादा धर्म के कारण उनके चित्र पसंद किए जाते हैं। इन सबसे ज्यादा विवाद रवि वर्मा की न्यूड पेंटिंग्स ने खड़ा किया।

उन्होंने उर्वशी और मेनका जैसी अप्सराओं के साथ-साथ इंद्र की पत्नी शचि से जुड़ी उन पौराणिक कहानियों को पेंट किया जिनमें नग्नता आती है। साथ ही उन्होंने इन्हीं चित्रों के लिए इस्तेमाल की गई मॉडल को सामान्य महिला के रूप में इरॉटिक तरीके से पेंट किया।

आप को याद दिला दें कि वो ये काम 1870-1900 के बीच कर रहे थे। एमएफ हुसैन के विवाद को याद करते हुए कल्पना कर लीजिए कि रवि वर्मा को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा होगा।

रवि वर्मा त्रावणकोर के जिस राजपरिवार से थे वहां मातृसत्ता थी। उनकी पत्नी रानी की सगी छोटी बहन थी। परंपरा के अनुसार रवि को घर मे आराम ही करते रहना था। इसी के चलते पति-पत्नी में कभी बनी नहीं।

रवि का रसिक मिजाज, अपनी नौकरानी और मॉडल कादंबनी से नजदीकियां भी एक वजह थी। रवि की पोती को महारानी ने गोद ले लिया और त्रावणकोर की अगली रानी बनाया। नई रानी ने अपने 16वें जनमदिन पर राजघराने के वारिस को जन्म दिया।

रवि के भाई राजा राजा वर्मा भी पेंटर थे। उन्होंने अपना करियर रवि के लिए छोड़ दिया। राजा रवि की तस्वीरों में बैकग्राउंड पेंट करते साथ ही सेक्रेट्री का काम भी करते। राजा की डायरी में रवि की कई पेंटिंग्स को पूरा करने की जानकारी मिलती है।

इसके अलावा रवि वर्मा के परिवार की वारिस रुक्मिनी वर्मा भी पेंटिग में सक्रिय हैं। रवि वर्मा की शैली को आगे बढ़ाते हुए पौराणिक कथाओं की सेमीन्यूड पेंटिग बनाने के कारण उनकी तस्वीरों पर भी विवाद हो चुके हैं। इसीलिए अब वो प्रदर्शनियों की जगह प्राइवेट कलेक्टर्स के लिए ही पेंटिंग बनाती हैं।

रवि वर्मा की पेंटिंग्स में मॉर्डन आर्ट्स का क्यूबिज्म, बिना आंखों वाले चेहरे या ज्यामितीय फिगर नहीं हैं। न उनकी पेंटिंग्स में बंगाल स्कूल की तरह से रंगों का प्रयोग या कंटेप्ररी आर्ट का कोई छिपा हुई रहस्य होता है। फिर भी उनकी बिलकुल फ्लैट डायनमिक्स वाली पेंटिंग्स ने हिंदुस्तान की पौराणिक परंपरा को एक अलग शक्ल दी है।

उनके पहले की तंजौर कला की सरस्वती की मूर्ति या पेंटिंग, राजस्थानी चित्रकला सब गुजरे जमाने की चीज लगती हैं। रवि वर्मा भारतीय पेंटिंग में मानसून की तरह आए जिन्होंने अपनी धारा में सब कुछ बहा कर फिर नया सृजन किया। (फर्स्टपोस्ट)

झारखंड में बूचड़खाने बंद...

पेज 15 से आगे

क्या पता कब कोई आ जाए और जानवर ले जाने के कारण मारपीट करने लगे।

बूचड़खानों की बंदी के बाद मुर्गों का बिकना भी बंद है। रांची-गेतलसूद मार्ग पर पोल्ट्री फार्म चलाने वाले बुधेश्वर बेदिया ने बीबीसी से कहा, च्न्माहौल खराब है। मुर्गा बेचे तो फंस जाएंगे। इसलिए, किसी तरह घर का खर्च चला रहे हैं।

मुख्य विपक्षी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा के बजरंग लोहरा सरकार को आदिवासी विरोधी करार देते हैं। वहीं, अनगड़ा के पूर्व प्रमुख और आजसू पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्य राजेंद्र शाही मुंडा ने कहा कि सरकार को बंद बूचड़खानों को शीघ्र खुलवाने की पहल करनी चाहिए।

चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता और च्खान खनिज और अधिकारज के संपादक जेवियर डायस ने बीबीसी से कहा, पशुपालन आदिवासियों का परंपरागत पेशा है। खेतीबारी, मजदूरी व पशुपालन कर आदिवासी अपना जीवन चलाते हैं। उनके लिए खस्सी या बकरी एटीएम के समान है। जिससे जब चाहें पैसा मिल सकता है।

क्यों लालू की नई मुश्किल नीतीश के लिए...

पेज 15 से आगे

संभावनाओं को खतरे में डालने की भूल नहीं करेंगे।' उनकी इस बात की पुष्टि बीते शनिवार प्रधान सचिव अंजनी कुमार सिंह की एक रिपोर्ट से भी होती है। इस रिपोर्ट में लालू परिवार के खिलाफ भाजपा द्वारा लगाए सभी आरोपों को एक सिरे से खारिज किया गया है।

लेकिन क्या सरकार के सबसे बड़े घटक के मुखिया पर लगे भ्रष्टाचार के ताजा आरोपों से नीतीश कुमार की उस स्वच्छ छवि को नुकसान को नुकसान नहीं पहुंचेगा जो उनकी ताकत रही है ? राजनीतिक जानकार मानते हैं कि सरकार के मंत्रियों पर लगाए जा रहे आरोपों से अगर नीतीश कुमार की छवि को थोड़ा-बहुत नुकसान भी पहुंचता है तो वे इससे समझौता कर सकते हैं। सुरेंद्र किशोर कहते हैं, 'नीतीश कुमार कर्पूरी ठाकुर के सिद्धांतों पर चलने वाले नेताओं में शामिल रहे हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का मानना था कि गरीबों के लिए काम करने वाली सरकार को सत्ता में बने रहने के लिए छोटे-मोटे समझौते करने पड़ते हैं।'

नीतीश कुमार की राजनीति पर नजर रखने वाले कई जानकारों की मानें तो 2015 में सत्ता संभालने के बाद उनके सामने चुनौती यह रही है कि राजद को काबू में रखकर अपने ढंग से सरकार कैसे चलाई जाए। इसके साथ ही केंद्र की राजनीति में विपक्षी दलों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने का एक मौका भी उनके हाथ लगा है। जानकारों के मुताबिक इन दोनों मोर्चों को एक साथ साधने की कोशिश में नीतीश कुमार की छवि ऐसे नेता के रूप में बनती जा रही है, जिनके बारे में कुछ भी अनुमान लगाना मुश्किल साबित हो रहा है।

इस बात की पुष्टि पिछले एक वर्ष के दौरान उनके द्वारा उठाए गए कई कदमों से होती है। इनमें नोटबंदी पर मोदी सरकार को समर्थन देना और पटना में प्रकाशोत्सव पर्व के मौके पर एक मंच पर नरेंद्र मोदी की तारीफें करना शामिल है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शताब्दी जन्मोत्सव को मनाने के लिए गठित राष्ट्रीय समिति में नीतीश कुमार के शामिल होने को भी भाजपा से उनकी बढ़ती नजदीकी के संकेत के रूप में देखा गया था।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह सब सरकार में राजद को काबू में रखने के लिए नीतीश कुमार की खास नीति का हिस्सा है। माना जा रहा है कि इसके जरिए वे विकल्प के रूप में भाजपा को हमेशा अपने पास रखना चाहते हैं, जिससे राजद सुप्रीमो सरकार में ज्यादा दखल न दे सकें। इसलिए लालू परिवार पर घोटाले के आरोप नीतीश कुमार के लिए मनमांगी मुराद जैसे हैं। इन्होंने नीतीश कुमार को लालू प्रसाद यादव को साधने के साथ-साथ सरकार पर अपनी पकड़ मजबूत करने का मौका भी दे दिया है। (सत्याग्रह)

उरी के बाद वाला पीएम का बयान सुकमा के बाद भी आया...

आधुनिक हवाई निगरानी उपकरण की खरीद की भी योजना है। ये नक्सली छत्तीसगढ़ और अन्य राज्यों के घने जंगलों में सक्रिय हैं।

बैठक में खुफिया सूचना जुटाने के तंत्र को दुरस्त करने, चल रहे अभियानों का सतर्कतापूर्वक विश्लेषण, समस्या के क्षेत्रों की पहचान करना और बेहतर परिणामों के लिए उनका समाधान करना शामिल है।

अमरीका में भेदभाव...

पेज 15 से आगे

रावनन बिजनेस मॉडल में बदलाव से भी आगे बढ़कर अपनी बात कहते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय आईटी कंपनियों को और कॉर्पोरेट सोशल जिम्मेदारी उठानी चाहिए। रावनन ने कहा, अमरीका में सामान्य लोगों के बीच धारणा है कि भारतीय कंपनियां यहां आकर उनकी नौकरियां छीन रही हैं। हमे इस धारणा को बदलने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, जो भारतीय अमरीका में रह रहे हैं, उन्हें अपने अमरीकी सहकर्मियों से और मेलजोल बढ़ाने की जरूरत है। भारतीय अमरीका के उन इलाकों में रहते हैं जहां सिर्फ भारतीयों की बस्तियां हैं। ये अपने घर से ही लंच बॉक्स लाते हैं। वे ऑफिस में खाते भी हैं तो भारतीयों के साथ ही जबकि अमरीकी सहकर्मी बाहर खाने जाते हैं। हम लोग अमरीकी समुदाय में घुलने-मिलने की कोशिश नहीं करते हैं।

रावनन ने कहा, एच1-बी वीजा यहां एक मुखर मुद्दा है क्योंकि अमरीका दुनिया का सबसे बड़ा टेक्नोलॉजी मार्केट है। हालांकि दुनिया के और देशों में भी यही स्थिति है। हम इसे ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर में भी महसूस कर सकते हैं। लक्ष्मीकांत का मानना है कि टीसीएस और इन्फोसिस जैसी कंपनियों पर एच1-बी वीजा के मामले में आरोप पूरी तरह से गलत नहीं हैं।

लक्ष्मीकांत ने कहा, यह सच है कि भारत को ऐसे 38 हजार वीजा मिले हैं। इनमें से 18 हजार टीसीएस, इन्फोसिस और कॉग्निजेंट टेक्नोलॉजी को मिले हैं। ये कंपनियां अपने फायदे के लिए इन नियमों इस्तेमाल का इस्तेमाल कर रही हैं।

हालांकि बालकृष्णन का मानना है कि नई पाबंदी कृत्रिम है। उन्होंने कहा कि यदि वे इन मुद्दों पर ज्यादा दबाव बनाएंगे तो भारत में सारी चीजें शिफ्ट हो जाएंगी। इससे आईटी सेक्टर के काम अन्य देशों में शिफ्ट होंगे। इसका मतलब यह हुआ कि काम वहां जाएगा जहां प्रतिभा है। इस मामले में हम चीन को देख सकते हैं। इसका एक प्रभाव यह भी होगा कि भारतीय आईटी पेशेवर जैसे पहले काम

मिनी सुडोकू-2903 का हल

2	4	3	6	5	1
5	1	6	2	4	3
4	6	1	5	3	2
3	2	5	4	1	6
6	3	4	1	2	5
1	5	2	3	6	4

छत्तीसगढ़ शब्द पहेली क्रमांक-4032 का सही उत्तर

ब	से	रा		आ	ला	अ	धि	का	री	
हु		ह		त्म		म		र्य		
ता		गी	र	जा	घ	र		क्ष		
य		र	खि		रौं		अ	म	न	
त	ल		या		दा	न	दा	ता		
	ल					दि	ल			
अ	क	स	र			या	त	ना		
दा		हे		वा		के		ला	ल	
	ना	ज		स	रो	पा		य		
अ	द	ना			क	र		क	ल	

गणित का चौराहा - 2952

8	-	5	×	6	-22
+		+		×	
7	-	2	×	9	-11
-		+		-	
3	×	4	+	1	13
12		11		53	

अंक जाल- 2942 का हल

	10	7	23	15	21		27	33	
30	5	4	9	7	5		8	7	15
25	5	3	8	2	7		3	4	7
			2	6	7	9	3	7	34
14	2	5	7		2	5	7	8	22
22	9	2	3	8		5	6	7	18
25	3	6	4	5	2	5			
9	6	3		4	7	8	8	5	32
14	8	6		1	5	7	3	2	18
	28	22		18	14	39	11	7	

सुडोकू- 4032 का हल (ch)

1	4	9	6	7	5	8	3	2
2	8	7	3	1	9	6	5	4
6	5	3	2	8	4	7	1	9
7	6	8	4	9	1	5	2	3
3	1	4	5	2	6	9	7	8
5	9	2	7	3	8	1	4	6
4	7	1	9	6	3	2	8	5
9	2	5	8	4	7	3	6	1
8	3	6	1	5	2	4	9	7

Name, Fame and Game-3952 Solution

अगर आप कुछ नाम ढूंढ न पाए हों तो यहां दिए गए उत्तरों की मदद लें। नामों को आड़ी और खड़ी कतारों के नंबर व उनकी दिशा के आधार पर ढूंढें

(Over,Down,Direction)
SAXENA(9,19,NE)
SEHGAL(9,6,E)
SENGUPTA(8,5,S)
SESHADRI(8,14,SW)
SETTY(13,17,NW)
SHAH(13,7,SW)
SHAN(15,23,W)
SHANKER(7,8,W)
SHARAF(10,9,SE)
SHARMA(14,7,S)
SHETH(16,15,N)
SHROFF(17,15,SW)
SHUKLA(6,7,W)
SIBAL(11,5,NE)
SIDHU(3,14,E)
SING(16,20,N)
SINGHAL(7,7,NW)
SINHA(1,16,SE)
SODHI(17,20,S)
SOLANKI(17,10,N)
SONI(4,12,NW)